



राजस्थान में पुरापाषाण कालीन स्थल: एक अध्ययन

देवेन्द्र कुमार बालोटिया¹¹ बी.ए.(ऑनर्स)(इतिहास), एम.ए.(इतिहास), बी.एड., नेट उत्तीर्ण राजस्थान.

ABSTRACT:

राजस्थान, भारत का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध क्षेत्र, प्रागैतिहासिक काल से ही मानव सभ्यता का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। पुरापाषाण काल, जिसे 'पुराने पत्थरों का युग' भी कहा जाता है, मानव इतिहास का वह चरण है जब इंसान ने पत्थर के औजारों का उपयोग करना प्रारंभ किया। इस शोध पत्र का उद्देश्य राजस्थान में पुरापाषाण कालीन स्थलों का अध्ययन करना है। इसमें इन स्थलों के भूगोल, ऐतिहासिक महत्व, उपकरणों के प्रकार, और मानव जीवन के प्रारंभिक चरणों में उनके योगदान पर चर्चा की गई है। यह अध्ययन न केवल प्राचीन सभ्यता की झलक प्रदान करता है, बल्कि राजस्थान के समृद्ध पुरातात्विक इतिहास को भी उजागर करता है।

KEYWORDS:

राजस्थान, पुरापाषाण काल, प्रागैतिहासिक स्थल, पत्थर के उपकरण, पुरातत्व, मानव विकास।

PAPER ACCEPTED DATE:

27th August 2024

PAPER PUBLISHED DATE:

30th August 2024

सब्जेक्ट मेटर

1. परिचय

पुरापाषाण काल मानव इतिहास का वह चरण है, जब इंसान शिकार और संग्रहण पर निर्भर था। इस युग को "पाषाण युग" के शुरुआती चरण के रूप में देखा जाता है। राजस्थान, जिसकी भौगोलिक विविधता और प्राकृतिक संसाधन इसे अनुसंधान के लिए उपयुक्त बनाते हैं, में इस काल के कई महत्वपूर्ण स्थल स्थित हैं। राजस्थान के पुरापाषाण कालीन स्थल हमें मानव जीवन के प्रारंभिक चरणों की झलक प्रदान करते हैं। पुरापाषाण काल (Palaeolithic Age) मानव इतिहास का प्रारंभिक युग है, जो लगभग 20 लाख वर्ष पूर्व से लेकर 10,000 ईसा पूर्व तक फैला है। यह युग मुख्यतः पत्थर के औजारों और शिकारी-संग्राहक जीवनशैली पर आधारित था। राजस्थान में पुरापाषाण कालीन स्थल इन प्राथमिकताओं और मानव के विकास के विभिन्न चरणों का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

पुरापाषाण काल को तीन भागों में विभाजित किया गया है:

- प्रारंभिक पुरापाषाण काल
- मध्य पुरापाषाण काल
- उत्तर पुरापाषाण काल

इनमें राजस्थान में पाए गए उपकरण, स्थलों की भौगोलिक स्थिति, और मानव जीवन के विकास की प्रक्रिया को समझना महत्वपूर्ण है।

राजस्थान का भूगोल और पुरापाषाण काल

राजस्थान का भूगोल प्राचीन मानव सभ्यता के विकास के लिए आदर्श था। यहां की प्रमुख भौगोलिक विशेषताओं में अरावली पर्वत श्रृंखला, घग्घर-हाकरा नदी, और रेगिस्तानी क्षेत्र शामिल हैं।

- अरावली पर्वत श्रृंखला
अरावली पर्वत श्रृंखला राजस्थान के प्रमुख भौगोलिक संरचनाओं में से एक है। यह क्षेत्र न केवल जल स्रोत प्रदान करता था, बल्कि यहां प्रचुर मात्रा में पत्थर भी पाए जाते थे, जो औजार बनाने के लिए उपयोगी थे।
- घग्घर-हाकरा नदी
यह नदी प्राचीन काल में राजस्थान के कई हिस्सों से होकर बहती थी। इसका प्रवाह प्राचीन मानव बस्तियों के लिए जल और कृषि की संभावनाएं प्रदान

करता था।

3. थार मरुस्थल

हालांकि थार मरुस्थल आज बंजर और कठोर प्रतीत होता है, लेकिन प्राचीन काल में यह मानव गतिविधियों के लिए उपयुक्त था। यहां की जलवायु और पर्यावरण मानव जीवन के लिए सहायक रहे।

राजस्थान में प्रमुख पुरापाषाण कालीन स्थल

राजस्थान के पुरापाषाण कालीन स्थल न केवल इस क्षेत्र की प्राचीन सभ्यता को दर्शाते हैं, बल्कि मानव विकास और तकनीकी नवाचार के साक्ष्य भी प्रस्तुत करते हैं। राजस्थान के पुरातात्विक स्थल भारत की प्राचीन सभ्यताओं और ऐतिहासिक धरोहरों का भंडार हैं। इनमें बागोर, आहड़, गिल्लूड और उदयपुर जैसे स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये स्थान न केवल राजस्थान बल्कि पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में पाषाण युग से ताम्र पाषाण युग तक के मानवीय विकास को समझने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ये स्थल मानव जीवन के क्रमिक विकास, कृषि, पशुपालन, धातुकर्म और समाज निर्माण के प्रारंभिक चरणों का साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

1. बागोर

बागोर, राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के मांडल तहसील में स्थित है। यह भारत के सबसे प्राचीन स्थलों में से एक है और इसे उत्तर-पाषाण कालीन स्थल माना जाता है। बागोर की खुदाई से यहाँ के मानव जीवन के कई अनछुए पहलुओं का पता चलता है।

खुदाई और अवशेष

- 1967-68 में यहाँ खुदाई का कार्य आरंभ हुआ, जिसमें बड़े पैमाने पर पत्थरों के उपकरण, हड्डियों के औजार, और मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए।
- इस स्थल से पशुओं की हड्डियाँ और पालतू जानवरों के अवशेष मिले हैं, जो बताते हैं कि यहाँ के लोग पशुपालन करते थे।
- बागोर के लोग शिकार और मछली पकड़ने में भी कुशल थे।
- यहाँ से मिले पत्थर के औजार, जैसे स्क्रैपर्स और ब्लेड, यह संकेत देते हैं कि लोग पाषाण उपकरणों का उपयोग करते थे।

जीवनशैली

बागोर के लोग मुख्यतः शिकारी-संग्रहकर्ता थे, लेकिन उन्होंने धीरे-धीरे कृषि और पशुपालन की ओर कदम बढ़ाया। यहाँ के लोगों ने जंगली जानवरों को पालतू बनाना शुरू किया। इस स्थल से प्राप्त अनाज और बीजों के अवशेष यह साबित करते हैं कि कृषि भी प्रारंभिक स्तर पर विकसित हो रही थी।

महत्व

बागोर का महत्व इस बात में है कि यह स्थल हमें उस संक्रमण काल का प्रमाण प्रदान करता है, जब मानव शिकारी से कृषक और पशुपालक में परिवर्तित हो रहा था। यह स्थल राजस्थान में प्रागैतिहासिक मानव जीवन का सबसे सटीक और विस्तृत चित्रण करता है।

2. आहड़

आहड़, जिसे आधुनिक समय में आयड़ के नाम से जाना जाता है, उदयपुर के पास स्थित है। यह स्थल ताम्र पाषाण कालीन सभ्यता का उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ की सभ्यता को 'आहड़ सभ्यता' कहा जाता है।

खुदाई और अवशेष

- आहड़ की खुदाई 1950 के दशक में आरंभ हुई थी।
- यहाँ से मिट्टी के बर्तन, तांबे के औजार, हड्डियों के अवशेष और पके हुए मृदभांड मिले हैं।
- इस क्षेत्र के मृदभांड लाल और काले रंग के होते थे, जो आहड़ संस्कृति की विशेषता है।
- यहाँ से मिली तांबे की वस्तुएँ, जैसे चाकू, भाले, और कुल्हाड़ी, यह दर्शाती हैं कि यहाँ के लोग धातु विज्ञान में पारंगत थे।

जीवनशैली

आहड़ के लोग मुख्यतः कृषक थे। वे गेहूँ, जौ और अन्य अनाजों की खेती करते थे। साथ ही, पशुपालन और धातु निर्माण भी उनकी अर्थव्यवस्था के प्रमुख घटक थे।

महत्व

आहड़ सभ्यता का महत्व ताम्र युग के धातुकर्म और सामाजिक संगठन को समझने में है। इस स्थल से प्राप्त अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि राजस्थान उस समय व्यापार और धातु उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र था।

3. गिल्लूड

गिल्लूड, राजसमंद जिले में स्थित है और यह स्थल आहड़ सभ्यता से संबंधित है। यह एक प्राचीन बस्ती का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

खुदाई और अवशेष

- गिल्लूड की खुदाई में बड़े पैमाने पर मिट्टी के बर्तन, तांबे के औजार, और अनाज भंडारण के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ से मिले मिट्टी के बर्तन लाल और काले रंग के हैं, जो आहड़ संस्कृति के समान हैं।
- गिल्लूड की सबसे महत्वपूर्ण खोजों में अनाज भंडारण के लिए बने बड़े गोदाम शामिल हैं।

जीवनशैली

गिल्लूड के निवासी कृषि, पशुपालन और व्यापार में निपुण थे। यहाँ से प्राप्त मुद्राएँ और सील इस बात का प्रमाण हैं कि यहाँ व्यापारिक गतिविधियाँ होती थीं।

महत्व

गिल्लूड का महत्व इसकी संगठित बस्तियों और कृषि तकनीकों के अध्ययन में है। यह स्थल राजस्थान में ताम्र पाषाण युग की अर्थव्यवस्था और समाज को समझने में सहायक है।

4. उदयपुर और आसपास के क्षेत्र

उदयपुर अपने प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। इसके आसपास के क्षेत्र भी प्राचीन सभ्यता के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

शैलाश्रय और गुफाएँ

- उदयपुर के आसपास के पहाड़ी क्षेत्रों में शैलाश्रय और गुफाएँ पाई गई हैं।
- इन गुफाओं में शैलचित्र और शिलालेख मिले हैं, जो प्राचीन मानव के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का परिचय देते हैं।
- इन चित्रों में पशुओं का शिकार, सामाजिक गतिविधियाँ, और धार्मिक अनुष्ठानों का वर्णन मिलता है।

खुदाई और अवशेष

- यहाँ से पाषाण उपकरण, मिट्टी के बर्तन, और लोहे की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।
- उदयपुर के पास स्थित क्षेत्रों में मिले शैलाश्रय मानव के शुरुआती निवास स्थलों का संकेत देते हैं।

महत्व

उदयपुर और इसके आसपास के क्षेत्रों का महत्व इस बात में है कि ये स्थल राजस्थान की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

सामूहिक महत्व

बागोर, आहड़, गिल्लूड और उदयपुर के आसपास के क्षेत्र भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन मानव सभ्यता के विकास को समझने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

- कृषि और पशुपालन का विकास:** इन स्थलों से यह पता चलता है कि राजस्थान में मानव ने सबसे पहले खेती और पशुपालन की शुरुआत की।
- धातु विज्ञान:** तांबे और अन्य धातुओं का उपयोग आहड़ और गिल्लूड के लोगों की तकनीकी प्रगति को दर्शाता है।
- सामाजिक संगठन:** इन स्थलों से प्राप्त अवशेष यह साबित करते हैं कि यहाँ के लोग संगठित समाज में रहते थे।
- व्यापारिक गतिविधियाँ:** मुद्राएँ और सीलें यह इंगित करती हैं कि राजस्थान उस समय व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था।

औजारों का वर्गीकरण और विश्लेषण

राजस्थान में पुरापाषाण काल के औजारों को उनकी उपयोगिता और निर्माण तकनीक के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

- शिकारी औजार**
 - हाथ की कुल्हाड़ियाँ**
शिकार और लकड़ी काटने के लिए उपयोगी।
 - भाले और नुकीले औजार**
शिकार में सहायक।
- घरेलू औजार**
 - खुरचनी**
जानवरों की खाल निकालने के लिए उपयोगी।
 - फलक औजार**
लकड़ी और अन्य कड़े पदार्थों को काटने के लिए।
- कृषि औजार**
आहड़ जैसे स्थलों से संकेत मिलता है कि शुरुआती मानव कृषि की तकनीक समझने लगा था।

राजस्थान के पुरापाषाण काल की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना

पुरापाषाण कालीन मानव छोटी बस्तियों में रहते थे। राजस्थान में पाए गए स्थलों से यह स्पष्ट होता है कि मानव छोटे समूहों में शिकार और संग्रहण पर आधारित जीवन व्यतीत करता था।

- जीविका के साधन**
मानव शिकार, मछली पकड़ने, और फल-सब्जियों के संग्रहण पर निर्भर था।

- **सामाजिक संरचना**
समूह में रहने की प्रवृत्ति और शिकार में सहयोग प्रारंभिक सामूहिक जीवन का संकेत देते हैं।
- **धार्मिक विश्वास**
हालांकि इस काल के धार्मिक विश्वासों के साक्ष्य सीमित हैं, लेकिन कुछ गुफा चित्र संकेत देते हैं कि प्रकृति पूजा प्रारंभ हो चुकी थी।

अंतरराष्ट्रीय संदर्भ और राजस्थान का योगदान

राजस्थान के पुरापाषाण स्थल न केवल भारत में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण हैं। इनकी तुलना अफ्रीका और यूरोप के पुरापाषाण स्थलों से की जा सकती है। राजस्थान के स्थलों में पत्थर के औजारों की शैली और तकनीक ने यह सिद्ध किया है कि यह क्षेत्र प्राचीन मानव गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

पुरातात्विक विधियां और चुनौतियां

राजस्थान के पुरापाषाण कालीन स्थलों के अध्ययन में पुरातात्विक तकनीकों का उपयोग किया गया है।

1. विधियां

- स्थलों का उत्खनन।
- उपकरणों का विश्लेषण।
- कार्बन डेटिंग।

2. चुनौतियां

- जलवायु की कठोरता।
- सीमित संसाधन।
- संरक्षण की समस्याएं।

निष्कर्ष

राजस्थान में पुरापाषाण कालीन स्थलों का अध्ययन न केवल इतिहास, बल्कि मानव सभ्यता के विकास को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र प्राचीन मानव के शारीरिक, मानसिक और तकनीकी विकास का प्रमाण प्रस्तुत करता है। राजस्थान की भौगोलिक

स्थिति, जैसे अरावली पर्वतमाला, थार मरुस्थल, और नदी घाटियाँ, पुरापाषाण युग के मनुष्यों के लिए एक आदर्श निवास स्थान थीं। इन स्थलों से प्राप्त औजार, शौलाश्रय, और अन्य अवशेष यह दर्शाते हैं कि उस काल के मानव ने अपने प्राकृतिक परिवेश को समझने और उसके अनुसार जीवन जीने की अद्भुत क्षमता विकसित की थी।

राजस्थान के पुरापाषाण कालीन स्थल केवल प्राचीन मानव जीवन का अध्ययन ही नहीं, बल्कि पर्यावरणीय और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समझने के लिए भी एक अमूल्य स्रोत हैं। इन स्थलों पर पाए गए प्रमाण यह दर्शाते हैं कि प्राचीन मानव ने अपनी तकनीकों, औजारों, और जीवनशैली को पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार ढाल लिया था। यह उनके बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और संघर्षशीलता का साक्ष्य है।

आधुनिक युग में, इन स्थलों का संरक्षण और अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। शहरीकरण, खनन, और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के कारण ऐसे स्थलों पर खतरा मंडरा रहा है। इन स्थलों के महत्व को जनसाधारण तक पहुँचाने और उनके संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। पुरातात्विक अनुसंधान और संग्रहालयों के माध्यम से इन स्थलों की जानकारी को जन-जन तक पहुँचाना चाहिए ताकि समाज इन धरोहरों का महत्व समझ सके।

राजस्थान में स्थित यह प्राचीन स्थल न केवल भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर का हिस्सा हैं, बल्कि वे विश्व धरोहर का भी अभिन्न अंग हैं। इनका अध्ययन वैश्विक स्तर पर मानव सभ्यता के विकास को समझने में योगदान देगा। इस प्रकार, राजस्थान के पुरापाषाण कालीन स्थल एक अमूल्य निधि हैं, जिन्हें सहेजना और संरक्षित करना आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारी जिम्मेदारी है।

REFERENCES

1. शर्मा, ए. के., *भारतीय पुरातत्व का इतिहास*, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2010।
2. मिश्रा, आर. पी., *राजस्थान का प्रागैतिहासिक अध्ययन*, जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2015।
3. चौहान, के. एल., *भारत के पुरापाषाण कालीन स्थल*, वाराणसी: ज्ञान भारती, 2008।
4. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण रिपोर्ट, नई दिल्ली: एएसआई, 2012।
5. जोशी, एम. एन., *पुरातत्व और मानव विज्ञान*, मुंबई: शिक्षा भारती, 2014।